पाठ-5
श्री मुफ़्तानंद जी से मिलिए

आइए सीखें ● सामाजिक बुराइयों को समझना और उनसे बचने का प्रयास करना ● शब्द-युग्म, सूक्ष्म अंतर वाले शब्द ● मुहावरे, कहावते, विराम-चिह्न ● हिन्दी मानक शब्द, सार्वनामिक विशेषण, सर्वनाम ● विशेषण - विशेष्य प्रयोग।

*(**पाठ-परिचय :** इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर किया है। कुछ लोग जिंदगी भर मुफ़्त में कुछ-न-कुछ प्राप्त करने की जुगाड़ में लगे रहते हैं। इस बुराई को लेखक ने मुफ़्तानंद जी के माध्यम से हास्य व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत किया है।)*

भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव-जंतु छोड़े हैं। कुछ काले, कुछ गोरे, सुंदर, असुंदर, भोले और जल्लाद। अलग-अलग स्वभाव, अलग-अलग चाल - ढाल। मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं, नाम है उनका मुफ़्तानंद जी। यथा नाम तथा गुण। 'माले मुफ़्त दिले बेरहम।' क्या मजाल कि कहीं दावत का झूठा भी निमंत्रण मिल जाए और वे जाने से रुक जाएँ - चाहे बीमार ही क्यों न हों, और चाहे बाद में, कुछ भी क्यों न भुगतना पड़े। वे ऐसे ही एक अवसर पर दावत में जा रहे थे। मुझसे बोले, भाई, अरे दो-ढाई रुपये का खाऊँगा, बारह आने का मिक्सर पी लूँगा, तब भी फायदे में ही रहूँगा।

'मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन' ब्रजभाषा की लोकोक्ति है। श्री मुफ्तानन्द जी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। शौक सब करेंगे। पान का भी शौक जान-पहचान वालों की जेब से ही होता है। आप पान खा रहे हैं, आपसे नमस्कार किया और पान पर हाथ बढ़ाया। यदि आप ट्रेन में सफर कर रहे हैं, तो किसी अजनबी से भी नि:संकोच रूप से, अपने आवश्यक शौक पूरा कर लेते है।

उनका सिद्धान्त है कि ऐसा करने से दुर्व्यसन अपनी सीमा पार नहीं कर पाते हैं उनकी यह भी मान्यता है कि जो स्वाद मुफ्त का पान खाने से आता है, वह पैसा खर्च करने पर कहाँ?

एक दिन मैं बाजार से लौटा। देखा कि श्रीमान मुफ्तानन्द गली में एक कटी पतंग लूटने को बेतहाशा दौड़े जा रहे हैं। यदि वह उन्हें मिल गई तो वे उसे प्राप्त करके कृतकृत्य हो जाएँगे। यद्यपि पतंग उड़ाने की अवस्था बहुत पीछे छोड़ चुके हैं, तथापि उस मुफ्त की पतंग को कैसे छोड़ दें?

शिक्षण-संकेत - ■ हास्य-व्यंग्य से परिचय कराते हुए पाठ का हाव-भाव के साथ वाचन करें। ■ पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। ■ लोकोक्ति एवं मुहावरों के अर्थ समझाएँ व लिखवाएँ। ■ 'फ' और 'फ़' का उच्चारण

मेरे घर दो दैनिक पत्र रोजाना आते हैं, मुझे उनकी प्रसादी तभी मिल पाती है, जब श्रीमान मुफ्तानंद भोग लगा लेते हैं। मोहल्ले में कौन-कौन लोग अखबार मँगाते हैं, उनकी नामावली उन्हें कण्ठस्थ हैं समय-समय पर सब पर कृपा करते हैं। उनका कथन है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने ज्ञानवर्द्धन के लिए, अधिक-से-अधिक समाचार-पत्र पढ़ने चाहिए किन्तु पैसा खर्च करके समाचार पत्र पढ़ना वे पाप समझते हैं।

उन्होंने भारतवर्ष की जनसंख्या बढ़ाने में काफी योग दिया है। ईश्वर की कृपा से उनके छह लड़के और चार लड़कियाँ हैं। शिक्षा सबको देना, वह अपना पावन कर्त्तव्य समझते हैं। इसके लिए सदैव वह फीस माफ कराने के चक्कर में स्कूलों के मैनेजर और प्रिंसिपलों के घर पर धरना देते रहते हैं। अपने इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सबका प्रयोग करते हैं; उनकी तिकड़म से चाहे योग्य और गरीब विद्यार्थी रह जाएँ लेकिन वह अपने किसी बच्चे की फीस नहीं देंगे।

एक दिन सुबह ही मेरे घर पधारे, बोले - ''भाई, जरा कालिदास ग्रन्थावली दे दो।'' मैंने कहा, आपको उसकी क्या आवश्यकता पड़ गई? उत्तर दिया - ''मेरे एक मित्र को चाहिए, उससे मेरा लाभ होने वाला है।'' अब आप बताइए लाभ होगा इनका और पुस्तक चाहिए मेरी। मैंने कहा, ''डीयर मुफ्तानन्द, पुस्तकें देने के बाद बहुत कम वापिस आती हैं। यदि आप दो दिन में लौटा दें तो ले जाइए।'' सारांश यह है कि वह पूरा वायदा करके ले गए। आज दो वर्ष हो गए, पुस्तकें वापिस करने का नाम नहीं लेते। इस प्रकार अनेक पुस्तकें अलमारी में बन्द रखते हैं, क्या मजाल कि आपकी दृष्टि भी उन पर पड़ जाए।

सिनेमा देखने का भी उनको शौक है। 'फ्री पास' प्राप्त करने में वह अत्यंत कुशल हैं। उन्हें किसी प्रकार पता लगना चाहिए कि आप सिनेमा जा रहे हैं, तुरन्त आपके साथ। जेब खाली। टिकट तो आप लेंगे ही और वह सिनेमा देखकर कृतार्थ करेंगे ही। एक दिन मुझ पर कृपा दृष्टि

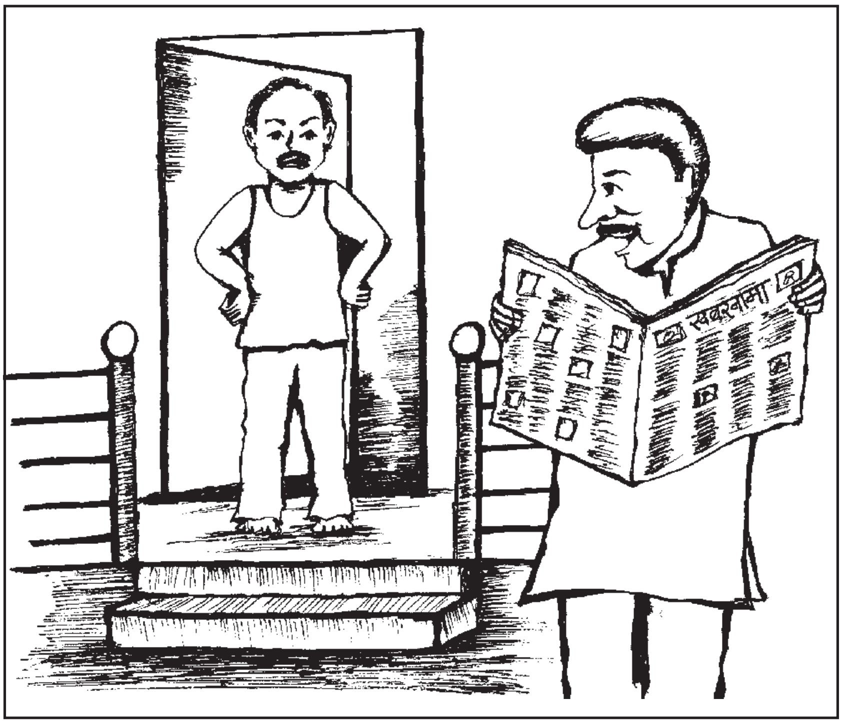

हुई। कहीं से एक थियेटर के पास ले आए थे। थियेटर रात्रि के 1 बजे समाप्त हुआ। मैंने बीच में कई बार उनसे घर वापिस चलने को कहा, लेकिन बराबर यही दोहराते रहे, 'मुफ्त में क्या बुरा है।' उनका विचार है कि मुफ्त देखने को मिले तो रात भर की नींद एक रद्दी-से-रद्दी थियेटर के लिए बलिदान की जा सकती है।

नगर में पानी के बरफ की फैक्टरी खुली। अपने विज्ञापन के लिए फैक्टरी के मालिक महोदय ने दो दिन तक मुफ्त बरफ बाँटने का ऐलान शहर में करवा दिया। मुफ्तखोरों के सरताज़, हमारे मुफ्तानन्द जी भी वहाँ घण्टों नष्ट करके 'क्यू' में योगी की तरह साधना कर के एक-एक टुकड़ा बरफ का दोनों दिन लाए। पहले दिन अपनी जूती वहाँ खो आए और दूसरे दिन नई कमीज वहाँ फड़वा आए, किन्तु मुफ्त में मिले उस बरफ के आगे यह नुकसान नगण्य था।

श्री मुफ्तानंदजी की तबीयत कभी खराब न हुई हो। यह बात नहीं है, किन्तु आज तक दवा तो क्या शीशी के पैसे भी उन्होंने अपनी जेब से खर्च नहीं किए। डॉक्टर, वैद्य, हकीम सभी से दोस्ती है और आखिर में सलामत रहे, सरकारी अस्पताल। आप पूछेंगे कि डॉक्टर तो किसी के दोस्त नहीं होते बस यही तो कबीर का रहस्यवाद है। मुफ्तानन्द जी बड़े उस्ताद हैं। डॉक्टर तो दुनिया की नब्ज टटोलते हैं और मुफ्तानन्द जी डॉक्टरों की। किसी डॉक्टर को अपनी खुशामद पसंद है, तो उसकी खुशामद। वैद्यजी कीर्तन के शौकीन हैं, तो उनके यहाँ कीर्तन। गरज यह कि किसी-न-किसी प्रकार पहले उनसे मित्रता और फिर मुफ्त में दवाई।

वैसे ये बारह महीने बीमार न भी हों तो अस्पताल से टॉनिक तो नित्य भरवा ही लेते हैं। मैंने एक दिन कहा, "व्यर्थ में दवाइयाँ मत पिया कीजिए।" बोले, "यार, पैसे तो नहीं खर्च होते। मुफ्त की चीज कभी नुकसान नहीं करती।" इहलोक को मुफ्त में सुधारकर मुफ्तानन्द जी, अब परलोक में भी मुफ्त जीवन-यापन करने की टोह में रहते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि जब भगवान ने ही इस प्रकार आनंद से निभा दी, तो स्वर्ग का टिकट खरीदने की आवश्यकता

नहीं पड़ेगी। भगवान मुफ्त में उनकी मुक्ति कर दें, यह प्रार्थना करते हुए मुफ्तानन्द जी को हम साष्टांग दंडवत करते हैं।

– डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

लेखक-परिचय : डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी व्यंग और हास्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के उर्वर कवि डॉ. चतुर्वेदी 40 ग्रंथो के लेखक हैं। गद्य तथा पद्य दोनों में आपका बराबर अधिकार है। डॉ. चतुर्वेदी के ठिठोली 'चकल्लम' 'मानवबिन्दु' मुख्य हास्य व्यंग्य हैं। आपको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

नि:संकोच	----------	कृतकृत्य	----------
जीवन-यापन	----------	तिकड़म-जुगाड़	----------
खुशामद	----------	इहलोक	----------
मुफ्तानन्द	----------	साष्टांग	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क. लेखक ने इस पाठ का नाम मुख्य पात्र के नाम पर क्यों रखा ?

ख. 'मुफ्तखोरों के सरताज़' किसे कहा गया है?

ग. लेखक से मुफ्तानंद ने कौन-सी ग्रंथावली माँगी?

घ. मुफ्तानन्द जी की कमीज़ कहाँ और क्यों फटी?

ङ. लेखक, मुफ्तानंद जी को साष्टांग प्रणाम क्यों करता है?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. मुफ्तानन्द महोदय की मुफ्तखोरी की घटनाओं में से आपको सबसे अधिक प्रभावित किस घटना ने किया? लिखिए।

ख. मुफ्तानंद जी पढ़ने के लिए समाचार पत्र कैसे प्राप्त करते थे?

ग. मुफ्तानन्द जी दूसरों से पुस्तकें माँगकर उनका क्या करते थे?

घ. लेखक ने 'कबीर का रहस्यवाद' किस संदर्भ में कहा हैं?

ङ: परलोक के संबंध में मुफ्तानन्द जी की क्या धारणा है?

प्रश्न 4. रिक्त स्थान भरिए-

1. .... का चंदन घिस मेरे ....

2. माले .... दिले ....

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

निमंत्रण, सिद्धान्त, अनुष्ठान, तिलांजलि, कृतकृत्य, कण्ठस्थ, साष्टांग, कृतार्थ।

यह भी जानिए

निमंत्रण - शब्द का अर्थ है - किसी कार्य, उत्सव में भोज आदि के लिए सम्मिलित होने का निवेदन।

आमंत्रण - शब्द का अर्थ है - किसी कार्य, उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए बुलावा किन्तु इसमें भोज आवश्यक नहीं।

दृष्टव्य है - वाक्य-प्रयोग

1. मेरी पुत्री के जन्मोत्सव के अवसर पर आपका निमंत्रण है।
2. आपको विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आमंत्रण-पत्र भेजा जा रहा है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित समानोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अन्न - अन्य   अकथ- अथक

आदि - आदी   उपकार - अपकार

अनल - अनिल

प्रश्न 3. निम्नलिखित मुहावरों / कहावतों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

यथा नाम तथा गुण; माले मुफ्त दिले बेरहम; मुफ्त का चंदन - घिस मेरे नंदन; धरना देना, नब्ज टटोलना, टोह में रहना।

ध्यान दीजिए :

बोलकर पढ़ते हुए विराम-चिह्नों पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है, नहीं तो वाक्य का अर्थ कुछ-का-कुछ हो जाता है। निम्नलिखित दोनों वाक्यों के अंतर पर ध्यान दीजिए:-

पढ़ो, मत लिखो।

पढ़ो मत, लिखो।

पहले वाक्य में 'पढ़ने' की बात कही गई है, 'लिखने' के लिए मना किया गया है। दूसरे वाक्य में 'पढ़ने' के लिए मना किया गया है, 'लिखने' की बात कही गई है।। यहाँ अल्प विराम (,) का यह सब कमाल है।

वास्तव में लिखते समय अथवा पढ़ते समय विराम-चिह्नों का ध्यान न रखा जाए, तो अर्थ कुछ-का-कुछ हो सकता है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित अनुच्छेद में यथास्थान विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए :

भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव जंतु छोड़े हैं कुछ काले कुछ गोरे कुछ सुन्दर कुछ असुन्दर भोले और जल्लाद अलग-अलग स्वभाव अलग अलग चाल ढाल मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं नाम है मुफ्तानन्द जी

प्रश्न 5. 'अजनबी' शब्द का हिन्दी में रूप 'अपरिचित' है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी रूप लिखिए-

ख़ुशामद, नब्ज, सलामत, दावत, बेरहम, अखबार, रोजाना, नुकसान ।

आइए जाने -

निम्नलिखित वाक्यों के जोड़ों में अंतर पर ध्यान दीजिए :-

1. वह लड़का भला है।
2. वह भला है।
3. कोई स्त्री दरवाजे पर खड़ी है।
2. कोई दरवाजे पर खड़ी है।

ऊपर के वाक्यों के जोड़ों में 'वह' और 'कोई' के प्रयोग में यह अंतर है कि पहले वाक्य में 'वह' और 'कोई' संज्ञा के साथ और दूसरे वाक्य में बिना संज्ञा के प्रयुक्त हुआ है।

यहाँ हम देख रहे हैं कि हमारी भाषा में कुछ शब्द सर्वनाम और विशेषण दोनों का काम करते हैं। ये शब्द हैं - वह, यह, जो, क्या, कोई आदि।

जब ये शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होते हैं, तब ये सर्वनाम का काम करते हैं;

जब इन शब्दों के बाद कोई संज्ञा शब्द आता है, तब ये विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं और सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

प्रश्न 6. क. इस पाठ से कुछ ऐसे वाक्य छाँटकर लिखिए, जिनमें सर्वनाम का प्रयोग विशेषण की तरह किया गया है।

ख. ऐसे वाक्य बनाइए जिनमें 'वह', 'यह', जो 'क्या', और 'कोई' शब्द सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त हुए हों।

ध्यान दीजिए - लाल-लाल टमाटर स्वादिष्ट होते हैं।

हरा - हरा खेत सुहावना लगता है।

काले-से-काले जामुन लाना।

अच्छे-से-अच्छा काम करो।

सीखिए -

लाल-लाल, हरा-हरा, काले-से-काले, अच्छे-से-अच्छा शब्द युग्म विशेषण हैं। जब विशेषणों में पुनरुक्ति की स्थिति आती है तो कुछ बल मिलता है।

संख्यावाचक विशेषणों (गणनात्मक स्थिति में) की पुनरुक्ति से - 'एक बार में' या 'प्रति अंश' या 'प्रति व्यक्ति' आदि का भाव प्रगट होता है, जैसे - मैं एक-एक व्यक्ति को देख लूँगा।

- दो-दो बच्चे जाएँ।
- एक-एक बच्चे को दो-दो आम दे दो।

प्रश्न 7. विशेषणों के पुनरुक्ति वाले विभिन्न अर्थ (भाव) के दो-दो वाक्य लिखिए।

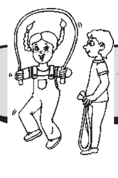

योग्यता विस्तार

1. हास्य-व्यंग्य से संबंधित कहानी एवं चुटकुले बालसभा में सुनाइए।
2. हास्य-व्यंग्य से संबंधित कुछ कहानियों की सूची बनाइए। ऐसे उदाहरण कक्षा में सुनाइए।
3. मुफ्त के आनंद उठाते समय कई बार हानि भी हो जाती है ऐसे उदाहरण कक्षा में सुनाइए।
4. इस तरह के प्रसंग खोजें और अपने मित्रों को बताएँ।